शोध मंथन Vol. XII No.IV Oct.-Dec. 2021 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

उत्तराखण्ड़ के पर्वतीय क्षेत्रों में स्वयं सहायता समूहों में महिलाओं की सहभागिता, समस्यायें एवं समाधान

प्राप्तिः 27.08.2021
स्वीकृतः 31.08.2021

डॉ० राज बहादुर
एसोसिएट प्रोफेसर, अथशास्त्र विभाग
श्री गुरू राम राय पी०जी० कॉलेज, देहरादूर
ईमेलः *dr.rajbahadur70@gmail.com*

अनिता
शोधार्थी, अर्थशास्त्र विभाग
श्री गुरू राम राय पी०जी० कॉलेज, देहरादूर

डॉ० महेश कुमार
असस्टिेंट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग
श्री गुरू राम राय पी०जी० कॉलेज, देहरादूर

सारांश

स्वयं सहायता समूह आज विकास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्यक्रम हो गया है। इसके प्रचार–प्रसार के साथ इसकी कार्यविधि का भी व्यावहारिक ज्ञान होना विकास कार्यो से जुड़ी संस्थाओं, कर्मिकों व कार्यकर्ताओं के लिए आवश्यक हो गया है। पहाडी क्षेत्रों में विभिन्न सरकारी एवं गैर सरकारी योजनाओं द्वारा महिला समूह गठित कर उन्हें बचत एवं आयसृजक गतिविधियों से जोड़ने से महिला शक्ति को एक नया स्रोत मिला है। समूहों का उपयोग केवल संस्थागत ऋणों तक सीमित न रहकर शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वरोजगार, महिला सशक्तिकरण व विकास आदि के क्षेत्र में भी हो रहा है।

इस अध्ययन का उद्देश्य महिलाओं द्वारा प्राप्त तकनीकी प्रशिक्षण की सिथिति का अध्ययन करना, समूह द्वारा सामाजिक कार्य/गतिविधि में सहभागिता का अध्ययन करना, स्वयं सहायता समूह के योगदान से प्राप्त संतुष्टि का अध्ययन करना, गांवों में महिला स्वयं सहायता समूहों का अध्ययन कर उनकी सत्तता तथा निरन्तरता को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों की पहचान करना तथा उनका संभावित निदान ढूंढना है।

इस हेतु चयनित क्षेत्र में स्थित महिला स्वयं सहायता समूहों का अध्ययन कर तथा समूह सदस्यों से बातचीत कर इस बात को जानना है, कि वे कौन से कारक हैं जो कि महिला स्वयं सहायता समूहों को निरन्तर प्रभावित करते हैं तथा जो महिला स्वयं सहायता समूह अच्छी तरह चल रहे हैं उन समूहों ने उन समस्याओं को कैसे दूर किया तथा वे किस प्रकार अपने समूहों की निरन्तरता को बनाये हुए है।

मुख्य बिन्दु

स्वरोजगार, सशक्तिकरण, निरन्तरता, आयसृजन।

परिचय

स्वयं सहायता समूह आज विकास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्यक्रम हो गया है। इसके प्रचार–प्रसार के साथ इसकी कार्यविधि का भी व्यावहारिक ज्ञान होना विकास कार्यो से जुड़ी संस्थाओं, कर्मिकों व कार्यकर्ताओं के लिए आवश्यक हो गया है। पहाडी क्षेत्रों में विभिन्न सरकारी एवं गैर सरकारी योजनाओं द्वारा महिला समूह गठित कर उन्हें बचत एवं आयसृजक गतिविधियों से जोड़ने से महिला शक्ति को एक नया स्रोत मिला है।

उत्तराखण्ड में महिलाओं की दयनीय आर्थिक स्थिति को देखते हुए विभिन्न सरकारी व गैर सरकारी योजनाओं एवं सस्थाओं द्वारा उनको स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से एकत्रित कर उन्हें बचत, आंतरिक ऋण, स्वास्थ्य, शिक्षा, परिवार नियोजन, महिला अधिकारों, विभिन्न नई कृषि एवं महिला श्रमभार न्यूनीकरण तकनीकियों की जानकारियां दी जा रही हैं तथा जागरूक किया जा रहा है। इस तरह के प्रयास कुछ हद तक सफल भी हो रहे हैं परन्तु यह सफलता समूह की स्थिरता एवं निरन्तता पर बहुत हद तक निर्भर करती है। अधिकांशतः यह देखने में आया है कि परियोजनाओं के दौरान तथा उनके साथ तो समूह अच्छी तरह कार्य करते हैं परन्तु उसके उपरान्त भी समूहों का विशेषकर महिला स्वयं सहायता समूहों का विघटन हो जाता है, कई बार तो समूह गठन के कुछ समय बाद ही टूट जाते हैं व वे निरन्तर नहीं रह पाते हैं तथा उन लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर पाते हैं जिस हेतु उनका गठन किया गया था तथा कई बार तो परियोजना के क्रियान्वयन के कुछ समय पश्चात् ही समूहों की टूटने कि प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है।

स्वयं सहायता समूहों के इस टूटने तथा विघटित होने की प्रक्रिया के पीछे अनेक कारण जिम्मेदार हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य गांवों में महिला स्वयं सहायता समूहों का अध्ययन कर उनकी सत्तता तथा निरन्तरता को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों की पहचान करना तथा उनका संभावित निदान ढूंढना है। इस हेतु चयनित क्षेत्र में स्थित महिला स्वयं सहायता समूहों का अध्ययन कर तथा समूह सदस्यों से बातचीत कर इस बात को जानना है, कि वे कौन से कारक हैं जो कि महिला स्वयं सहायता समूहों को निरन्तर प्रभावित करते हैं तथा जो महिला स्वयं सहायता समूह अच्छी तरह चल रहे हैं उन समूहों ने उन समस्याओं को कैसे दूर किया तथा वे किस प्रकार अपने समूहों की निरन्तरता को बनाये हुए है।

अध्ययन का उद्देश्य

इस अध्ययन के निम्न उद्देश्य हैं–

1 स्वयं सहायता समूहों में महिलाओं की सहभागिता का अध्ययन करना।

2 महिलाओं द्वारा प्राप्त तकनीकी प्रशिक्षण की सिथिति का अध्ययन करना।

3 समूह द्वारा सामाजिक कार्य/गतिविधि में सहभागिता का अध्ययन करना।

4 स्वयं सहायता समूह के योगदान से प्राप्त संतुष्टि का अध्ययन करना।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में जनपद चमोली के 9 विकासखण्ड़ों में से 5 विकासखण्ड लिये गये है। चयनित पांचों विकासखडों विकासखण्ड जोशीमठ, दशोली, घाट, कर्णप्रयाग, गैरसैण में स्वयं सहायता समूहों से कुल 320 उत्तरदाताओं का चयन अध्ययन में किया गया है। शोध हेतु न्यादर्शों का चयन

स्तरीकृत दैव निदर्शन विधि द्वारा किया गया है। वर्तमान अनुसंधान में प्रदत्तों के संकलन हेतु एक मिश्रित प्रश्नावली एवं साक्षात्कार अनुसूची का निर्माण किया गया है। द्वितीयक स्रोतों के रूप में आवश्यक सूचनाएं एकत्रित करने के लिए स्वयं सहायता समूहों के रिकॉर्डों, सांख्यिकीय अभिलेखों, जिला ग्राम्य विकास अभिकरण एवं आजीविका कार्यालय में सुरक्षित लेखों एवं शैक्षिक पंजिकाओं तथा प्रशासनिक रिकार्डों आदि का उपयोग कर सूचनाएं एवं आंकड़े प्राप्त किये गये।

स्वयं सहायता समूहों में महिलाओं की सहभागिता

स्वयं सहायता समूहों में महिलाओं की सहभागिता को जानने के उद्देश्य से चयनित विकासखण्डों में आजीविका परियोजना द्वारा गठित महिला स्वयं सहायता समूहों का अध्ययन इस हेतु किया गया कि ये समूह महिलाओं की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने एवं महिला सशक्तिकरण को बढ़ाने में कितने सक्षम है क्योंकि ये समूह अच्छी तरफ चल रहे हैं तथा मजबूत स्थिति में हैं जबकि विकास खण्डों में कई अन्य सरकारी एवं गैर सरकारी परियोजना द्वारा भी स्वयं सहायता समूहों का गठन किया गया था परंतु वे समूह कुछ समय बाद ही टूट गये। जनपद में कार्यरत स्वयं सहायता समूहों में महिलाओं की सहभागिता को जानने का प्रयास किया गया तथा यह भी जानने का प्रयास किया कि क्या समूह सक्रिय रूप में कार्यरत हैं इस तरह इनके माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों की महिलायें कितनी सशक्त हुयी तथा इन समूहों में महिलाओं की क्या सहभागिता है का अध्ययन किया गया है।

महिलाओं द्वारा प्राप्त तकनीकी प्रशिक्षण

अध्ययन क्षेत्र में महिला उत्तरदाताओं के द्वारा प्राप्त तकनीकि प्रशिक्षण का विश्लेषण करने से ज्ञात हुआ कि 92.50 प्रतिशत महिलाओं ने तकनीकी प्रशिक्षण लिया है जबकि 7.50 प्रतिशत महिलाओं ने तकनीकी प्रशिक्षण नहीं लिया है जैसे तालिका संख्या 1 में दर्शाया गया है–

तालिका संख्या–1 महिलाओं द्वारा तकनीकी प्रशिक्षण लेने संबंधी विवरण

क्र0 सं0	क्या आपने तकनीकी प्रशिक्षण लिया है?	महिलाओं की प्रतिशत संख्या
1.	हाँ	92.50
2.	नहीं	7.50
कुल योग		100.00

***स्रोत–प्राथमिक संमक**

अतः उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि अधिकांश महिलाओं ने तकनीकी प्रशिक्षण प्राप्त किया है। (चित्र संख्या–1)

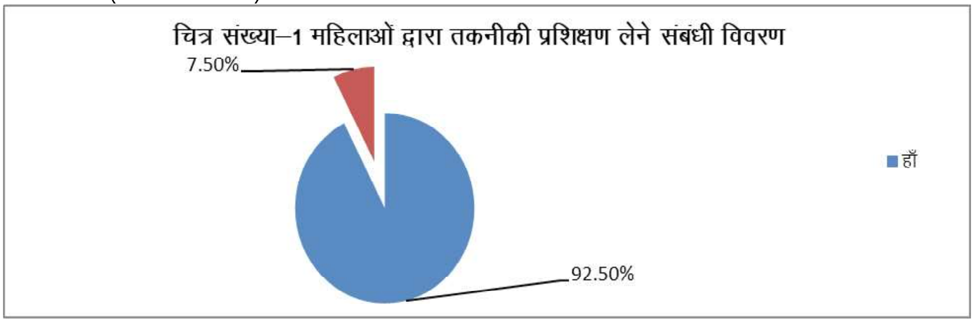

महिलाओं द्वारा तकनीकी प्रशिक्षण हेतु चयनित व्यवसाय

उत्तरदाता महिलाओं के प्राप्त प्रशिक्षण विषय का विश्लेषण करने से ज्ञात हुआ कि 26.00 प्रतिशत महिलायें ऐसी हैं जिनके द्वारा दुग्ध व्यवसाय विषय में प्रशिक्षण लिया गया है, 22.50 प्रतिशत महिलाओं द्वारा कृषि व्यवसाय में तकनीकी प्रशिक्षण लिया है, 21.50 प्रतिशत महिलाओं ने हस्त कला में प्रशिक्षण लिया है, तथा 17.50 प्रतिशत महिलायें ऐसी हैं जिन्होंने ने हथकरघा में प्रशिक्षण लिया है, 7.50 प्रतिशत महिलाओं ने कोई प्रशिक्षण नहीं लिया है, जबकि 5.00 प्रतिशत महिलाओं ने अन्य क्षेत्रों में प्रशिक्षण लिया हैं जैसा कि तालिका संख्या 2 में दर्शाया गया है–

तालिका संख्या–2 महिलाओं द्वारा तकनीकी प्रशिक्षण हेतु चयनित व्यवसाय संबंधी विवरण

क्र0 सं0	आपने तकनीकी प्रशिक्षण किस व्यवसाय में किया है?	महिलाओं की प्रतिशत संख्या
1.	दुग्ध व्यवसाय में	26.00
2.	कृषि में	22.50
3.	हस्त कला	21.50
4.	हथकरघा	17.50
5.	अन्य	5.00
6.	नहीं लिया	7.50
	कुल योग	**100.00**

***स्रोत–प्राथमिक संमक**

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि दुग्ध एवं कृषि व्यवसाय के अतिरिक्त बहुत कम महिलाओं ने अन्य व्यवसायों में तकनीकी प्रशिक्षण लिया है। (चित्र संख्या–2)

चित्र संख्या– 2 महिलाओं द्वारा तकनीकी प्रशिक्षण हेतु चयनित व्यवसाय संबंधी विवरण

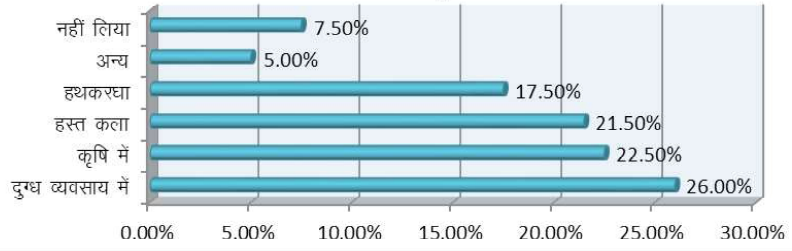

महिलाओं की विभिन्न गतिविधियों में सहभागिता

सर्वेक्षण क्षेत्र में उत्तरदाता महिलाओं की किन विभिन्न गतिविधियों में सहभागिता है से संबंधित विश्लेषण से ज्ञात होने पर 67.50 प्रतिशत महिलायें समूह की गतिविधियों में सक्रिय सहभागिता लेती है, 24.00 प्रतिशत महिलाओं की समूह में पदाधिकारी एवं सक्रिय सहभागिता, जबकि 8.50 प्रतिशत महिलाओं की समूह में केवल सदस्यता है जिसे तालिका संख्या 3 में दर्शाया गया है–

तालिका संख्या–3 महिलाओं की विभिन्न गतिविधियों में सहभागिता का स्तर संबंधी विवरण

क्र0 सं0	समूह की गतिविधियों में सहभागिता का स्तर	महिलाओं की प्रतिशत संख्या
1.	सक्रिय सहभागिता	67.50
2.	पदाधिकारी एवं सक्रिय सहभागिता	24.00
3.	केवल सदस्यता	8.50
कुल योग		**100.00**

***स्रोत–प्राथमिक संमक**

उपरोक्त विश्लेषण समूह की गतिविधियों में अधिकतम महिलाओं की अधिकतम सक्रिय सहभागिता को दर्शाता है। (चित्र संख्या–3)

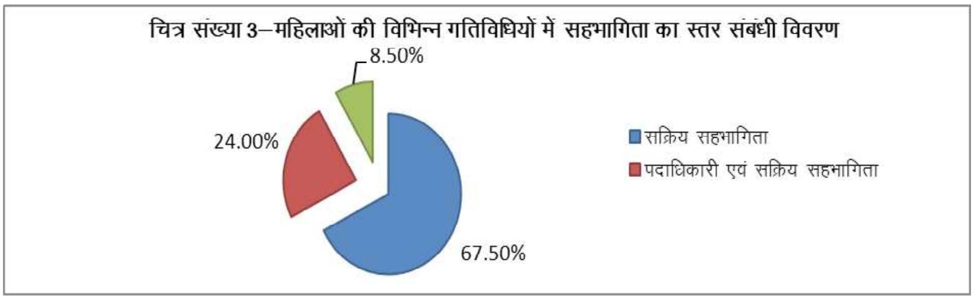

समूह द्वारा सामाजिक कार्य/गतिविधि में सहभागिता

उत्तरदाता महिलाओं से समूह की सामाजिक कार्यों एवं गतिविधियों में सहभागित से संबंधित प्राप्त जानकारी का विश्लेषण करने पर ज्ञात हुआ कि 93.50 प्रतिशत महिलाओं की सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय सहभागिता रही है, जबकि 6.50 प्रतिशत महिलाओं की कोई सहभागिता नहीं रही है जैसे कि तालिका संख्या 4 में दर्शाया गया है–

तालिका संख्या–4 समूह द्वारा सामाजिक कार्य/गतिविधि में सहभागिता संबंधी विवरण

क्र0 सं0	समूह की सामाजिक कार्य/गतिविधियों में सहभागिता रही है?	महिलाओं की प्रतिशत संख्या
1.	हाँ	93.50
2.	नहीं	6.50
कुल योग		**100.00**

***स्रोत–प्राथमिक संमक**

अतः विश्लेषण से स्पष्ट है कि ज्यादातर महिलाओं की समूह की सामाजिक कार्य गतिविधियों में सक्रिय सहभागिता रही है। (चित्र संख्या–5)

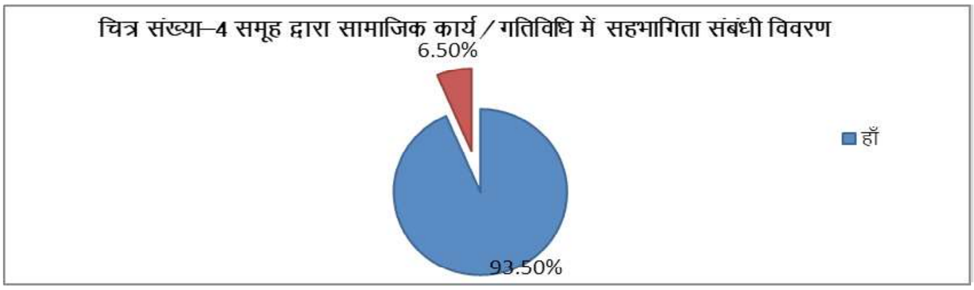

स्वयं सहायता समूह के योगदान से प्राप्त संतुष्टि

अध्ययन क्षेत्र में उत्तरदाता महिलाओं में स्वयं सहायता समूह के योगदान से प्राप्त संतुष्टि के आंकड़ों का विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि 45.50 प्रतिशत महिलायें संतुष्ट हैं, 32.50 प्रतिशत महिलायें ठीक–ठाक संतुष्ट हैं, तथा 18.50 प्रतिशत महिलायें अत्यधिक संतुष्ट हैं, जबकि 4.00 प्रतिशत महिलायें समूह के योगदान से असंतुष्ट हैं जिसे तालिका संख्या 5 में दर्शाया गया है–

तालिका संख्या–5 स्वयं सहायता समूह के योगदान से प्राप्त संतुष्टि से संबंधित विवरण

क्र0सं0	आप स्वयं सहायता समूह के योगदान से कितने संतुष्ट हैं?	महिलाओं की प्रतिशत संख्या
1.	असंतुश्ट	4.00
2.	ठीक–ठाक है	32.00
3.	संतुश्ट	45.50
4.	अत्यधिक संतुष्ट	18.50
कुल योग		100.00

***स्रोत–प्राथमिक संमक**

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि महिलायें अधिकांश स्वयं सहायता समूह से संतुष्ट हैं। (चित्र संख्या–5)

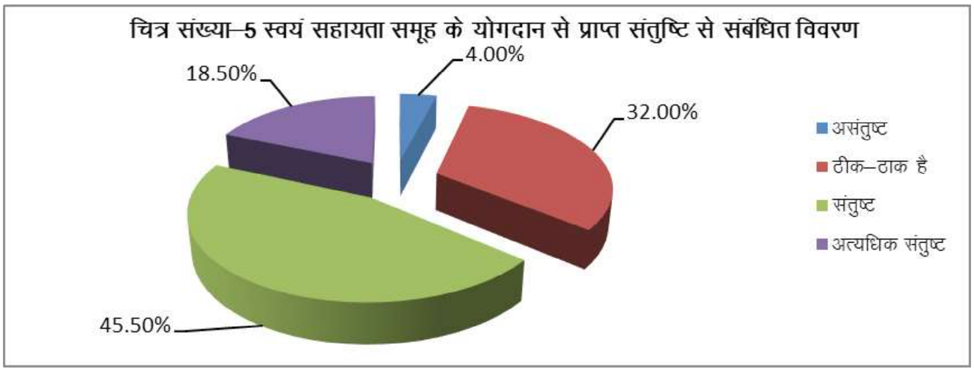

समूह के गठन में आने वाली प्रमुख समस्यायें

उत्तरदाता महिलाओं को समूह संगठन में आने वाली समस्याओं से संबंधित आंकड़ों का विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि 36.00 प्रतिशत महिलायें रूपये जमा करने की स्थिति में नहीं हैं,

20.50 प्रतिशत महिलाओं को बेरोजगारी संबंधी समस्या का सामना करना पड़ता है, 17.50 प्रतिशत महिलाओं को घर के काम की अधिकता है, 13.50 प्रतिशत महिलाओं से ज्ञात हुआ कि लोग विश्वास नहीं करते है, तथा 12.50 प्रतिशत महिलायें मेहनत नहीं करना चाहते है जो तालिका संख्या 6 में दर्शाया गया है–

तालिका–6 समूह के गठन में आने वाली प्रमुख समस्याओं का सामना करने संबंधी विवरण

क्र0 सं0	आपके अनुसार गांव में समूह गठन में कौन सी समस्या प्रमुख है?	महिलाओं की प्रतिशत संख्या
1.	लोग विश्वास नहीं करते	13.50
2.	मेहनत नहीं करना चाहते	12.50
3.	रुपये जमा करने की स्थिति में नहीं	36.00
4.	बेरोजगारी	20.50
5.	घर के काम की अधिकता	17.50
कुल योग		**100.00**

***स्रोत–प्राथमिक संमक**

विश्लेषण से स्पष्ट है कि अधिकतर महिलाओं को रूपये जमा करने की समस्या संबंधी समस्याओं का सामनाकरना पड़ता है।

चित्र संख्या – 6समूह गठन में आने वाली प्रमुख समस्याओं का सामना करने संबंधी विवरण

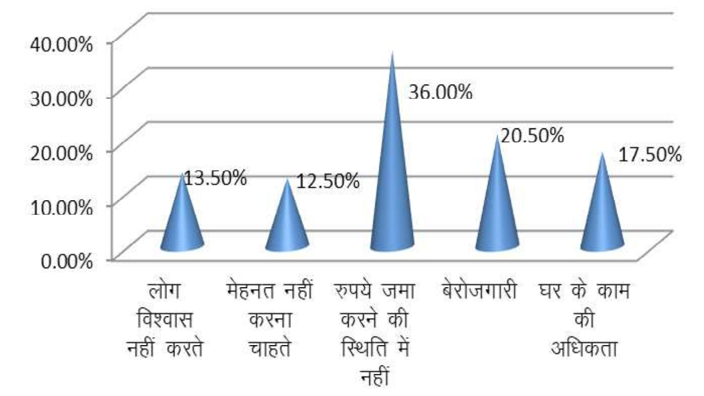

समूह गठन में आने वाली समस्याओं के समाधान

उत्तरदाता महिलाओं से समूह के गठन में आने वाली समस्याओं के समाधान से संबंधित जानकारी का विश्लेषण किये जाने पर यह ज्ञात होता है कि 59.00 प्रतिशत महिलाओं के अनुसार वे सामान्य रूप से सहायक रहे 31.00 प्रतिशत महिलायें अत्यधिक सहायक रहे तथा 5.50 प्रतिशत महिलाओं को इस विषय में कोई जानकारी नहीं थी केवल 4.50 प्रतिशत महिलाओं का विचार था कि स्वयं सहायता समूह गठन में आने वाली समस्याओं में किसी प्रकार सहायक नहीं रहे। जैसे कि तालिका संख्या 7 में दर्शाया गया है–

तालिका संख्या–7 समूह गठन में आने वाली समस्याओं के समाधान संबंधी विवरण

क्र0 सं0	इन समस्याओं के समाधान में स्वयं सहायता समूह कितने सहायक हैं?	महिलाओं की प्रतिशत संख्या
1.	अत्यधिक	31.00
2.	सामान्य रूप से सहायक	59.00
3.	सहायक नहीं	4.50
4.	नहीं पता	5.50
कुल योग		100.00

***स्रोत–प्राथमिक संमक**

अतः विश्लेषण से ज्ञात होता कि समूह गठन में आने वाली समस्याओं के समाधान में स्वयं सहायता समूह सामान्य रूप से सहायक रहे। (चित्र संख्या–7)

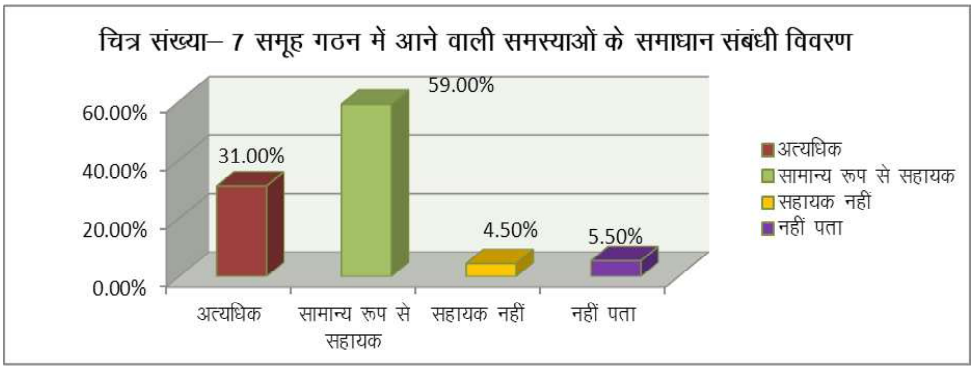

समूह गठन में आने वाली समस्याओं के समाधान के सुझाव

अध्ययन क्षेत्र में उत्तरदाता महिलाओं के द्वारा समूह गठन में आने वाली समस्याओं के समाधान हेतु दिये गये सुझावों को स्वीकार किये जाने संबंधी आंकड़ों का विश्लेषण करने से स्पष्ट होता है कि अधिकतर 68.00 प्रतिशत महिलाओं के सुझावों को वरियता दी जाती है, जबकि 20.50 प्रतिशत महिलाओं का मानना है कि उनके द्वारा दिये गये सुझावों को कभी–कभी स्वीकार किया जाता है, 6.50 प्रतिशत महिलाओं के अनुसार उनके सुझावों को स्वीकार नहीं किया जाता है जबकि 5.00 प्रतिशत महिलाओं ने कहा कि वे इस विषय में कुछ कह नहीं सकते। जैसे कि तालिका संख्या 8 में दर्शाया गया है–

तालिका संख्या–8 समूह गठन में आने वाली समस्याओं के समाधान के सुझाव संबंधी विवरण

क्र0 सं0	क्या समूह के गठन में आपके सुझावों को स्वीकार किया जाता है?	महिलाओं की प्रतिशत संख्या
1.	हाँ	68.00
2.	नहीं	6.50
3.	कभी–कभी	20.50
4.	कुछ कह नहीं सकते	5.00
कुल योग		100.00

***स्रोत–प्राथमिक संमक**

अतः स्पष्ट है कि महिलाओं के समूह गठन में आने वाली समस्याओं के समाधान में अधिकांश महिलाओं के सुझावों को स्वीकार किया जाता है। (चित्र संख्या–8)

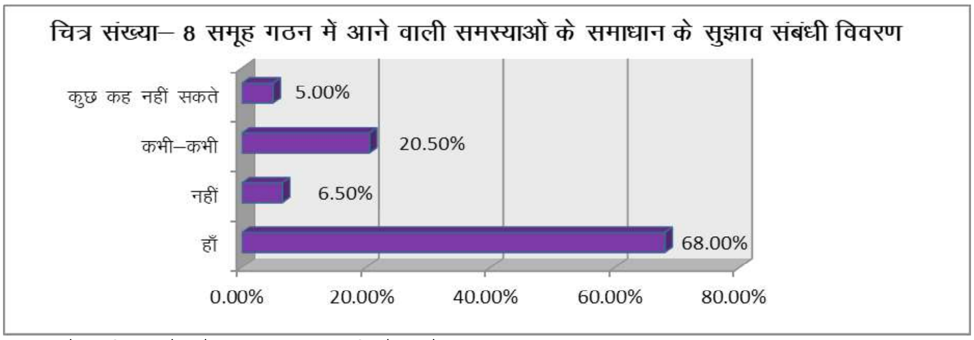

समूह में महिलाओं के द्वारा प्रस्तुत किये गये प्रमुख प्रस्ताव

सर्वेक्षण क्षेत्र में स्थित समूह में महिलाओं के द्वारा प्रस्तुत प्रस्तावों संबंधी आंकड़ों का विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि 31.00 प्रतिशत महिलाओं ने बचत कार्यक्रम संबधी प्रस्ताव रखा, 28.50 प्रतिशत महिलाओं ने स्वरोजगार संबंधी, 15.50 प्रतिशत महिलाओं ने ग्रामीण योजनाओं की जागरूकता संबधी, 14.50 प्रतिशत महिलाओं ने शिक्षा एवं स्वच्छता जागरूकता संबंधि प्रस्ताव रखे तथा 6.00 प्रतिशत महिलाओं ने आजीविका संवंर्धन से सबंधित प्रस्ताव जबकि 4.50 महिलाओं ने स्वास्थ्य से संबंधित प्रस्ताव रखे। जैसे कि तालिका संख्या 9 में दर्शाया गया है–

तालिका संख्या–9 समूह में महिलाओं के द्वारा प्रस्तुत किये गये प्रमुख प्रस्तावों संबंधी विवरण

क्र0 सं0	प्रमुख प्रस्ताव	महिलाओं की प्रतिशत संख्या
1.	स्वरोजगार	28.50
2.	ग्रामीण योजनाओं की जागरुकता	15.50
3.	बचत कार्यक्रम	31.00
4.	शिक्षा एवं स्वच्छता जागरुकता	14.50
5.	आजीविका संवर्धन	6.00
6.	स्वास्थ्य	4.50
	कुल योग	**100.00**

***स्रोत–प्राथमिक संमक**

अतः उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि अधिकांश महिलाओं ने बचत कार्यक्रम से संबंधित प्रस्ताव समूह में रखे। (चित्र संख्या–9)

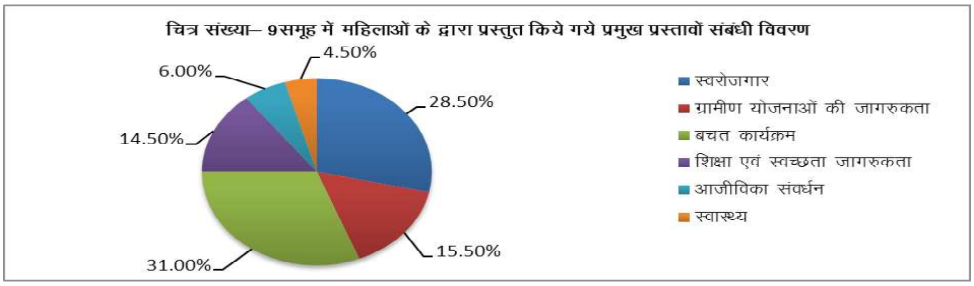

समूह के स्वीकृत प्रस्ताव

उत्तरदाता महिलाओं से समूह में उनके द्वारा रखे गये कौन से प्रस्तावों को स्वीकार किया गया है से संबंधित आंकड़ों का विश्लेषण करने से ज्ञात हुआ कि 30.50 प्रतिशत महिलाओं के स्वरोजगार संबंधि प्रस्तावों को स्वीकार किया गया है, 28.00 प्रतिशत महिलाओं के बचत कार्यक्रम संबंधी प्रस्ताव, 14.50 प्रतिशत महिलाओं का ग्रामीण योजनाओं की जागरूकता संबंधी प्रस्ताव, 12.00 प्रतिशत महिलाओं ने शिक्षा एवं स्वच्छता संबंधी प्रस्ताव, 9.50 प्रतिशत महिलाओं के आजीविका संवर्धन संबंधी प्रस्ताव जबकि 5.50 प्रतिशत महिलाओं के स्वास्थ्य संबंधी प्रस्तावों को स्वीकृत किये गये हैं। जैसे कि तालिका संख्या 10 में दर्शाया गया है–

तालिका संख्या–10 समूह के स्वीकृत प्रस्ताव संबंधी विवरण

क्र0 सं0	स्वीकृत प्रस्ताव	महिलाओं की प्रतिशत संख्या
1.	स्वरोजगार	30.50
2.	ग्रामीण योजनाओं की जागरुकता	14.50
3.	बचत कार्यक्रम	28.00
4.	शिक्षा एवं स्वच्छता जागरुकता	12.00
5.	आजीविका संवर्धन	9.50
6.	स्वास्थ्य	5.50
कुल योग		100.00

***स्रोत–प्राथमिक संमक**

अतः विश्लेषण से स्पष्ट है कि ज्यादातर महिलाओं के स्वरोजगार संबंधी प्रस्तावों को स्वीकार किये गये है। (चित्र संख्या–10)

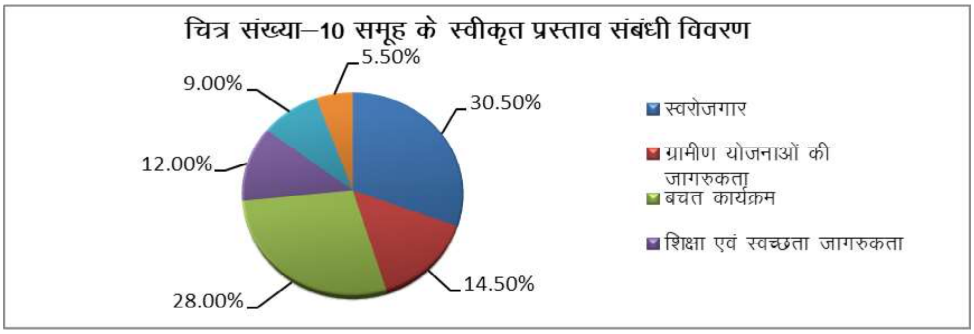

निष्कर्ष

- अध्ययन क्षेत्र में अधिकांश महिलाओं ने तकनीकी प्रशिक्षण लिया है। जिसमें से अधिकांश महिलाओं ने दुग्ध व्यवसाय सम्बन्धी प्रशिक्षण प्राप्त किया है इसके उपरान्त महिलाओं द्वारा कृषि व्यवसाय से सम्बन्धी तकनीकी प्रशिक्षण लिया है। कुछ महिलाओं ने हस्त कला एवं हथकरघा में भी प्रशिक्षण लिया है।
- अध्ययन करने पर ज्ञात हुआ कि अधिकांश महिलाओं की सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय सहभागिता रही है इस प्रकार स्वयं सहायता समूह में जूड़ने से महिलाओं में सामाजिक

गतिविधियों के प्रति रूचि जाग्रत हुयी है। स्वयं सहायता समूह के योगदान से प्राप्त संतुष्टि के विषय में अधिकांश महिलायें इनसे संतुष्ट हैं तथा भविष्य में भी वो स्वयं सहायता समूह से जूड़े रह कर कार्य करना चाहती हैं।

- महिलाऐं स्वंय सहायता समूह को समस्याओं के समाधान में अधिकांश महिलाऐं समूहों को सामान्य रूप से सहायक रहे मानती हैं जबकि कुछ महिलाऐं इन समूहों को अत्यधिक सहायक मानती हैं।
- महिलाओं के द्वारा समूह गठन में आने वाली समस्याओं के समाधान हेतु दिये गये सुझावों को स्वीकार किये जाने में वरीयता दिए जाने संबंधी आंकड़ों का विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि अधिकतर महिलाओं द्वारा दिए गये सुझावों को समूहों द्वारा वरियता दी जाती है।
- सर्वेक्षण क्षेत्र में स्थित समूहों में महिलाओं के द्वारा बचत कार्यक्रम, स्वरोजगार, ग्रामीण योजनाओं की जागरूकता, शिक्षा एवं स्वच्छता जागरूकता, आजीविका संवर्धन, स्वास्थ्य से संबंधित प्रस्ताव रखे गये। इन प्रस्तावों में से समूहों द्वारा स्वरोजगार संबंधि प्रस्तावों को प्राथमिकता दी गयी। इसके बाद क्रमशः बचत कार्यक्रम संबंधी प्रस्ताव, ग्रामीण योजनाओं की जागरूकता संबंधी प्रस्ताव, शिक्षा एवं स्वच्छता संबंधी प्रस्ताव एवं आजीविका संवर्धन संबंधी प्रस्तावों को वरीयता दी गयी।
- महिलाओं को समूह संगठन में अधिकांश महिलाऐं मुख्यतया रूपये जमा करने की स्थिति में नहीं हैं, महिलाओं को बेरोजगारी संबंधी समस्या का सामना करना पड़ता है एवं महिलाओं को घर के काम की अधिकता की समस्या का भी मुख्य रूप से सामना करना पड़ता है।

सुझाव

उपरोक्त समस्याओं के निवारण हेतु निम्नु सुझाव दिये जा सकते हैं–

- स्वयं सहायता समूहों को सुचारू एवं सफल बनाने के लिए क्षेत्रीय एवं मानवीय संसाधनों का सही से चयन होना आवश्यक है।
- प्रशिक्षण लेने के क्षेत्र में भी महिलाओं को समस्यायें उत्पन्न होती है जिसका मुख्य कारण शिक्षा का अभाव है जिस कारण महिलायें प्रशिक्षण लेने में पीछे रह जाती है अतः विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में महिला शिक्षा का प्रसार आवश्यक है।
- ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य के प्रति भी जागरूकता कम होती इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता है और ग्रामीणों को स्वास्थ्य के प्रति और अधिक जागरूक जाय।
- सरकार द्वारा चलाये जा रहे गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों में सुधार किया जाना आवश्यक है।
- ग्रामीण क्षेत्रों में प्राथमिक सुविधाएं जैसे– बिजली, पानी, अस्पताल, यातायात आदि की उचित व्यवस्था हो।
- औद्योगिक विकास के क्षेत्र में भी जनपद अभी पिछड़ा हुआ है, अैद्योगिक इकाईयों की अति आवश्यकता है जिसमें रोजगार के अवसर हो तथा महिलाओं को अत्यधिक रोजगार की प्राप्ति हो
- जनपद में पर्याप्त मात्रा में आलू, सेब, माल्टा की खेती होती है किन्तु ज्यादा समय तक नगदी फसलों को सुरक्षित रखा जाय इस हेतु अभी तक कोई शीत गृहों की व्यवस्था

उपलब्ध नहीं है किसानों को इस प्रकार की समस्याओं का सामना न करना पड़े इस हेतु भण्डारण की व्यवस्था हो।

- जनपद के बेरोजगार युवकों को तकनीकी एवं कौशल विकास प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए जिससे की युवक अपने स्वयं (निजी) के व्यवसायों में कार्य कर सके जिससे पर्वतीय क्षेत्रों से हो रहे पलायन को रोका जा सके इस ओर ध्यान देना आवश्यक है।

अतः ग्रामीण महिलाओं के विकास के लिए विशेषकर जनपद के पर्वतीय ग्रामीण महिलाओं के विकास हेतु संबंधित सुझावों की ओर ध्यान आकर्शित करना अति आवश्यक है क्योंकि महिलाओं के विकास में सम्पूर्ण राज्य ही नहीं वरण देश का विकास भी निहित है।

संदर्भ

1. सिंह, वाई.के. कुशल., गौतम, एस.एस. (2007). ''प्रफमेन्स ऑफ वूमेन्स सेल्फ–हेल्प ग्रुप्स (एज.एच.जी.) इन डिस्ट्रिक मुरादाबाद''. इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ रूरल स्टडीज (आई. आई.आर.एस.) वोल्यूम. 14. एन.ओ. 2. अक्टूबर।
2. रहीम, ए.ए. (2010). ''वूमेन इम्पावरमेंट थ्रू एस.एच.जी''. न्यू कन्ट्री पब्लिकेशन्सः नई दिल्ली. इण्डिया. पृष्ठ 96–100.
3. जैन, एस. (2011). 'महिलाओं के विकास में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका बालाघाट जिले के विशेष संदर्भ में'. पृष्ठ 280–295.
4. शर्मा, प्रेमनारायण., विनायक, वाणी. (2011). ''गरीबी उन्मूलन एवं महिला सशक्तिकरण''. भारत बुक सेन्टर. पृष्ठ 147.